© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

काव्य प्रयोजन

डॉ. प्राची केसरी
संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्य प्रयोजन को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। परन्तु काव्य और प्रयोजन का तात्पर्य क्या है? इसे स्पष्ट करते हुए कहा गया है– जगत् के विभिन्न सुख–दुःख, आघात– प्रत्याघात, सरस–कटु अनुभवों से प्रेरणा पाकर गहन अनुभूतियों के क्षणों में निष्पन्न भावुक हृदय की अनूठी गद्य–पद्यमयी रचना काव्य कहलाती है।

कवयोः कर्म काव्यम्। अर्थात् कवि के कर्म को काव्य तथा काव्यशास्त्र के शब्दों में – **तस्य कर्म स्मृतं काव्यम्**। कवि की रचना को कर्म कहते है, जो कवयन करें अर्थात् वर्णन करें। वह कवि है, उसका कर्म काव्य है। जैसे बिना गुञ्जन प्रकट किये भ्रमर उङ पाने में समर्थ नहीं होता है (वह गुनगुनाते हुए ही उङता है) उसी प्रकार यह कवि भी कविकर्म के बिना जी नहीं सकता। इसलिए काव्य को निसर्गजात कवि कर्म माना जाता है। यह जन्म–जन्मान्तर से प्राप्त होने वाले दिव्य संस्कारों का श्रेष्ठ फल है।

अब काव्य रचना या सर्जना का प्रयोजन या उद्देश्य क्या है? किसी कार्य में मनुष्य तभी प्रवृत्त होता है, जब उसमें उसका कोई प्रयोजन या हेतु हो– **प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्त्तते**। इससे स्पष्ट है कि बिना किसी प्रयेाजन के कोई मूर्ख भी किसी कार्य में प्रव्त्त नहीं होता।

किसी कार्य में प्रवृत्ति होने के लिए उस कार्य का फल जानना आवश्यक है, निष्फल कार्यों में कोई प्रवृत्त नहीं होता है। अतः शास्त्र के प्रारम्भ में उसका फल अवश्य बताना उपयुक्त होता है।
शास्त्र का फल जानने के लिए पाठक को अनुबन्ध चतुष्टय का ज्ञान आवश्यक है।

सिद्धार्थं सिद्धसम्बन्धं श्रोतुं श्रोता प्रवर्तते।
शास्त्रादौ तेन वक्तव्यः सम्बन्धः सप्रयोजनः।।

अनुबन्ध चार प्रकार के है– **अधिकारी, विषय, सम्बन्ध और प्रयोजन**। साहित्यदर्पण के अनुसार चतुर्वर्ग को काव्य का प्रयोजन बताया गया । वही ग्रन्थ के पढने का भी प्रयोजन है। जो चतुर्वर्ग के अभिलाषी हैं, वे ही इस ग्रन्थ के पढने के अधिकारी हैं। काव्यविवेचना ग्रन्थ का प्रधान विषय और उसके साथ ग्रन्थ का प्रतिपाद्य–प्रतिपादक भाव सम्बन्ध है। इन्हीं चारों अधिकारी, विषय, सम्बन्ध और प्रयोजन को अनुबन्ध चतुष्टय कहते हैं।

अनुबन्ध चतुष्टय के पश्चात् काव्य प्रयोजन पर काव्यशास्त्री स्वतन्त्र रूप से विचार विमर्श करते है। वास्तव में मानव की प्रत्येक प्रवृत्ति हेतुमूलक होती है। यह हेतु ही उसे कर्म में प्रवृत्त करता है। काव्य रचना या सर्जना के पीछे कवि या सर्जक का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य रहता है यही उद्देश्य ही काव्य प्रयोजन कहलाता है। काव्य प्रयोजन के सम्बन्ध में संस्कृत काव्यशास्त्रियों का मतैक्य नहीं है। अतः प्रमुख आचार्यों के मत निम्नलिखित हैं–

आचार्य भरत

आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र में प्रयोजन की चर्चा की है, जो निम्नलिखित है–

उत्तमाधममध्यानां नाराणां कर्मसंश्रयम्
हितोपदेशजननं धृति–क्रीडा–सुखादिकृत्।।
दुःखार्त्तानां श्रमार्त्तानां शोकार्त्तानां तपस्विनाम्
विश्रान्तिजननं काले नाटयमेतद् भविष्यति।।
धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्द्धनम्
लोकोपदेशजननं नाटयमेतद् भविष्यति।।

अर्थात् नाटयशास्त्र दुःखों से ,श्रम से, शोक से पीडित लोगों को संसार में सुख प्रदान करने वाला होता है।

भामह

भामह ने कवि और पाठक दोनों को दृष्टि में रखकर काव्यप्रयोजन पर प्रकाश डाला है– **धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।**

करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धनम्।। अर्थात् उत्तम काव्य की रचना धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप चारों पुरूषार्थों तथा समस्त कलाओं में निपुणता और कीर्ति एवं प्रीति अर्थात् आनन्द को उत्पन्न करने वाली होती है।

वामन

वामन ने कर्म की दृष्टि से काव्य प्रयोजन पर प्रकाश डाला है। इन्होंने दृष्ट तथा अदृष्ट रूप में काव्य के दो प्रयोजन माने हैं–

काव्यं सद् दृष्टादृष्टार्थं प्रीतिकीर्तिहेतुत्वात्। इनमें से प्रीति अर्थात् आनन्दानुभूति को काव्य का दृष्ट तथा कीर्ति को काव्य का अदृष्टार्थ प्रयोजन माना है।

भोज

महाराज भोज ने भी मुख्य रूप से कीर्ति और प्रीति (आनन्दानुभूति) को ही काव्य का प्रयोजन माना है–

निर्दोषं गुणवत्काव्यमलंकारैरलंकृतम्।
रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति।।

कुन्तक

कुन्तक ने वक्रोतिजीवितम् में काव्य प्रयोजनों का निरूपण किया है–

धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः
काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारकः।।
व्यवहारपरिस्पन्दसौन्दर्यं व्यवहारिभिः
सत्काव्याधिगमादेव नूतनौचित्यमाप्यते।।
चतुर्वर्गफलास्वादमप्यतिक्रम्य तद्विदाम्
काव्यामृतरसेनान्तचमत्कारो वितन्यते।।

अर्थात् काव्य की रचना अभिजात–श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न राजकुमार आदि के लिए सुन्दर एंव सरस ढंग से कहा गया धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि का सरल मार्ग है।

अतः कुन्तक ने काव्यामृतरस से उत्पन्न अन्तचमत्कार को ही चतुर्वर्गफलास्वाद से भी श्रेष्ठतर काव्यप्रयोजन माना है।

विश्वनाथ

साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ कहते है कि –

चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि । काव्यादेव । अर्थात् अल्पबुद्धि वालों को भी सरलतापूर्वक चतुर्वर्ग की फलप्राप्ति काव्य से ही होनी संभव है।

जगन्नाथ

तत्र कीर्तिपरमाह्लादगुरूराजदेवताप्रसादाद्यनेकप्रयोजनकस्य काव्यस्य । पण्डिराज जगन्नाथ कीर्ति, परमाह्लाद एंव त्रिविध (गुरू, राजा और देवता) अनुकम्पा को काव्यप्रयोजन मानते है।

आचार्य मम्मट

काव्यप्रकाशकार आचार्य मम्मट ने काव्य का प्रयोजन स्पष्ट किया है–

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये
सद्यः परनिवृत्तये कान्तासम्मितयोपदेशयुजे।

काव्य यश का जनक, अर्थ का उत्पादक, व्यवहार का बोधक, अनिष्ट का नाशक, पढने (सुनने, देखने आदि) के साथ ही परमानन्द प्रदान करने वाला तथा स्त्री के समान (सरसरूप से कर्त्तव्याकर्त्तव्य) का उपदेश प्रदान करने वाला होता है। इस प्रकार मम्मट ने छः काव्यप्रयोजन माने है।

1) यशसे– काव्य से यश की प्राप्ति होती है। कालिदास आदि अनेक कवियों ने बहुत सी रचनायें लिखी, जिससे उनका नाम संस्कृत साहित्य में विख्यात हो गया। अतः सुयश साहित्य की रचना से प्राप्त होता है।

2) अर्थकृते– धन की प्राप्ति के लिए काव्य रचना की जाती है। **उदाहरणार्थ**– धावकादि कवियों ने श्रीहर्ष आदि के नाम से रत्नावली नाटिका की रचना करके पर्याप्त धन प्राप्त किया था।

3) व्यवहारविदे– लोक व्यवहार के समुचित ज्ञान के लिये भी काव्य रचना की जाती है। काव्य, नाटक इत्यादि में पात्रों के अभिनय द्वारा उनके परस्पर व्यवहार की शैली का परिज्ञान होता है। विशेषकर राजा, मित्र, पती–पत्नी, भाई इत्यादि के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये इन सब का ज्ञान काव्यादि के द्वारा साधारण मनुष्य को प्राप्त होता है।

4) शिवेतरक्षतये– जो शिव अर्थात् मंगल या कल्याण से इतर अर्थात् अमंगलकारी हो या अनिष्ट का नाशक हो। **उदाहरणार्थ**– बाण की पत्नी ने अनजाने में ही क्रोधित होकर अपने ही भाई मयूरभट्ट को कुष्ट रोगी होने का शाप दे दिया था। मयूर भट्ट ने सूर्यशतक की रचना करके उस शाप से मुक्ति पायी थी। इससे यह सिद्ध होता है कि अनिष्ट का नाश काव्य का चतुर्थ प्रयोजन है।

5) सद्यः परनिवृत्तये– सद्यः परनिवृत्तये अर्थात् काव्य के निर्माण अथवा पाठ के साथ ही जो एक विशेष प्रकार के आन्तरिक आनन्द की प्राप्ति होती है। वह अलौकिक आनन्दानुभूति ही काव्य का सबसे मुख्य प्रयोजन है। यह अलौकिक आनन्द सात्त्विक कोटि का है इसलिए इसकी तुलना ब्रह्मानन्द के साथ की गयी है। ब्रह्मानन्द की अनुभूति जिस साधक को होती है, वह उसी में ब्रह्ममय हो जाता ह। जैसे– जब बूँद सागर में मिल जाती है तो फिर उसका पृथक् अस्तित्त्व बचा कहाँ? फिर सागर बनने की अनुभूति ही रह जाती है। इसी प्रकार ब्रह्मानन्द भी अनिर्वचनीय है। काव्यानन्द को भी ब्रह्मानन्द के समकक्ष (सहोदर) बताया गया है। ब्रह्मसाक्षात्कारजन्य आनन्द की समकक्षता का सबसे बडा प्रमाण यही है कि दोनों ही विगलितवेद्यान्तर होते है।

6) कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे– उपदेश तीन प्रकार के होते है–

1– प्रभुसम्मित– राजा द्वारा

2– सुहृत्सम्मित– मित्र द्वारा

3– कान्तासम्मित– पत्नी द्वारा

वेदशास्त्र आदि की शैली प्रभुसम्मित है। राजा की आज्ञा या राजकीय विधान सदा शब्द प्रधान होते है। इसमें जो भी आज्ञा दी जाती है उसका अक्षरशः पालन अनिवार्य है।

इतिहास– पुराण आदि की सुहृत्सम्मित शैली है। इसमें शब्दों की प्रधानता न होकर अर्थ पर विशेष बल दिया जाता है। जिनका पालन करना अनिवार्य नहीं है।

काव्य की उपदेश शैली प्रभुसम्मित तथा सुहृत्सम्मित शैली से भिन्न प्रकार की है। उसमें न शब्द की प्रधानता होती है और न अर्थ की प्रधानता होती है बल्कि दोनों का गुणीभाव होकर रस की प्रधानता होती है। अतः इस शैली को कान्तासम्मित शैली कहा जाता है। स्त्री जब किसी में पुरूष को प्रवृत्त या किसी कार्य से उसको निवृत्त करती है, तब वह अपने सारे सामर्थ्य से उसको सरस बनाकर ही प्रेरित करती है। इसलिए इसको रसप्रधान

शैली कहा जाता है। इस शैली में काव्य के रसास्वादन के साथ–साथ कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य का ज्ञान भी मनुष्य को होता है।

उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट है कि मम्मट द्वारा प्रतिपादित छः प्रयोजनों में तीन यश, अर्थ, अनिष्ट का नाशक रचनाकार कविनिष्ठ तथा तीन व्यवहार का ज्ञान, सद्यः परनिवृत्तये, कान्तासम्मित उपदेश पाठकनिष्ठ (सहृदय सामाजिक) है।

काव्य प्रयोजन

|

1) कविकृते | **2) पाठककृते**

| |

1)यशप्राप्तिः 2)धनप्राप्ति 3)शिवेतरक्षतये | **1)व्यवहारविदे 2)सद्यः 3)कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे**

परनिवृत्तये

आचार्य मम्मट के द्वारा निर्दिष्ट छः प्रयोजनों के अतिरिक्त धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप चतुर्वर्ग प्रयोजनों को भी काव्यशास्त्रियों ने महत्वपूर्ण स्थान दिया है, जो मम्मट के प्रयोजनों में समाहित हो जाते है। अतः पूर्ववर्ती एंव परवर्ती सभी आचायों ने आदरपूर्वक इन काव्यप्रयोजन को सर्वसम्मत स्वीकार किया है।

सन्दर्भः–

1) नाट्यशास्त्र 1 अध्याय 113–115 श्लोक
2) काव्यांलकार 1,2
3) काव्यांलकारसूत्र 1,1,5
4) सरस्वतीकाण्ठाभरण 1/2
5) वक्रोतिजीवितम् प्रथम उन्मेष 3–5 कारिका
6) साहित्यदर्पण प्र0 परि0
7) रसगंगाधर प्रथमाननम्
8) काव्यप्रकाश प्रथम उल्लास 2कारिका